* أَلَمْ تَرَ إِلَى ٱلَّذِينَ خَرَجُواْ مِن دِيَٰرِهِمْ وَهُمْ أُلُوفٌ حَذَرَ
ٱلْمَوْتِ فَقَالَ لَهُمُ ٱللَّهُ مُوتُواْ ثُمَّ أَحْيَٰهُمْۚ إِنَّ ٱللَّهَ لَذُو فَضْلٍ
عَلَى ٱلنَّاسِ وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَ ٱلنَّاسِ لَا يَشْكُرُونَ ﴿٢٤٣﴾ وَقَٰتِلُواْ
فِي سَبِيلِ ٱللَّهِ وَٱعْلَمُوٓاْ أَنَّ ٱللَّهَ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ﴿٢٤٤﴾ مَّن ذَا ٱلَّذِي
يُقْرِضُ ٱللَّهَ قَرْضًا حَسَنًا فَيُضَٰعِفَهُۥ لَهُۥٓ أَضْعَافًا كَثِيرَةًۚ
وَٱللَّهُ يَقْبِضُ وَيَبْصُۜطُ وَإِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ﴿٢٤٥﴾ أَلَمْ تَرَ إِلَى ٱلْمَلَإِ
مِنۢ بَنِيٓ إِسْرَٰٓءِيلَ مِنۢ بَعْدِ مُوسَىٰٓ إِذْ قَالُواْ لِنَبِيٍّ لَّهُمُ ٱبْعَثْ
لَنَا مَلِكًا نُّقَٰتِلْ فِي سَبِيلِ ٱللَّهِۖ قَالَ هَلْ عَسَيْتُمْ إِن كُتِبَ
عَلَيْكُمُ ٱلْقِتَالُ أَلَّا تُقَٰتِلُواْۖ قَالُواْ وَمَا لَنَآ أَلَّا نُقَٰتِلَ فِي سَبِيلِ
ٱللَّهِ وَقَدْ أُخْرِجْنَا مِن دِيَٰرِنَا وَأَبْنَآئِنَاۖ فَلَمَّا كُتِبَ عَلَيْهِمُ
ٱلْقِتَالُ تَوَلَّوْاْ إِلَّا قَلِيلًا مِّنْهُمْۚ وَٱللَّهُ عَلِيمُۢ بِٱلظَّٰلِمِينَ ﴿٢٤٦﴾
وَقَالَ لَهُمْ نَبِيُّهُمْ إِنَّ ٱللَّهَ قَدْ بَعَثَ لَكُمْ طَالُوتَ مَلِكًاۚ قَالُوٓاْ
أَنَّىٰ يَكُونُ لَهُ ٱلْمُلْكُ عَلَيْنَا وَنَحْنُ أَحَقُّ بِٱلْمُلْكِ مِنْهُ وَلَمْ
يُؤْتَ سَعَةً مِّنَ ٱلْمَالِۚ قَالَ إِنَّ ٱللَّهَ ٱصْطَفَىٰهُ عَلَيْكُمْ
وَزَادَهُۥ بَسْطَةً فِي ٱلْعِلْمِ وَٱلْجِسْمِۖ وَٱللَّهُ يُؤْتِي مُلْكَهُۥ مَن
يَشَآءُۚ وَٱللَّهُ وَٰسِعٌ عَلِيمٌ ﴿٢٤٧﴾ وَقَالَ لَهُمْ نَبِيُّهُمْ إِنَّ ءَايَةَ مُلْكِهِۦٓ
أَن يَأْتِيَكُمُ ٱلتَّابُوتُ فِيهِ سَكِينَةٌ مِّن رَّبِّكُمْ وَبَقِيَّةٌ مِّمَّا
تَرَكَ ءَالُ مُوسَىٰ وَءَالُ هَٰرُونَ تَحْمِلُهُ ٱلْمَلَٰٓئِكَةُۚ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ
لَءَايَةً لَّكُمْ إِن كُنتُم مُّؤْمِنِينَ ﴿٢٤٨﴾

Theme	
Fight in the path of Allah without the fear of death since there is no escape from death. Israelites asked for a king to fight in the way of Allah. Allah appointed Talut to be their king.	अल्लाह की राह में मौत के ख़ौफ़ के बग़ैर जिहाद करो, क्योंकि मौत से कोई बच नहीं सकता। बनी इस्राईल ने अल्लाह की राह में लड़ने के लिए एक बादशाह का मुतालबा किया। अल्लाह तआला ने तालूत को उनका बादशाह मुक़र्रर फ़रमाया।
Tarjumani	
Have you reflected on the case of thousands of people (Israelites) who fled their homes for fear of death? Allah said to them: "Die" (gave them death). Then He gave them life again. Surely, Allah is bountiful to mankind, but most of the people do not pay thanks. O believers, fight in the path of Allah without fear of death and bear in mind that Allah hears and knows everything. Who will loan to Allah a beautiful loan which Allah will increase manifold? Allah alone can decrease and increase wealth, and to Him you all shall return. Have you not reflected on what the	तुमने उन लोगों के हाल पर भी कुछ गौर किया, जो मौत के डर से घर-बार छोड़कर निकले थे और हज़ारों की तादात में थे? अल्लाह ने उनसे फरमाया : मर जाओ | फिर उसने उनको दोबारा ज़िन्दगी बख्शी | हकीक़त यह है कि अल्लाह इनसान पर बड़ा फज्ल फर्मनेवाला है, मगर अकसर लोग शुक्र अदा नहीं करते -- - मुसलमानो! अल्लाह की राह में जंग करो और ख़ूब जान रखो कि अल्लाह सुननेवाला और जाननेवाला है | तुममें कौन है जो अल्लाह को कर्ज़े-हसना दे ताकि अल्लाह उसे कई गुना बढ़ा-चढ़ाकर वापस करे? घटना भी अल्लाह के इखतियार में है और बढ़ाना भी, और उसी की तरफ़ तुम्हें पलटकर जाना है | फिर तुमने उस

leaders of the children of Israel demanded from one of their Prophets after the death of Musa (Moses)? "Appoint for us a king," they said, "and we will fight in the cause of Allah." The Prophet replied: "What if you refuse to fight when you are ordered to do so?" They replied, "How could we refuse to fight in the cause of Allah, while we have been driven out from our homes and from our children?" But when, on their demand, they were ordered to fight, all refused except a few of them. Allah knows the wrongdoers. Their Prophet told them: "Allah has appointed Talut (Saul) to be your king." They replied: "How can he be our king when some of us are more deserving than he? Besides, he is not rich." The Prophet said: "Allah has chosen him to rule over you and blessed him with more knowledge and a bigger stature. Allah grants kingship to whom He pleases and Allah is All-Sufficient for His	मामले पर भी गौर किया जो मूसा के बाद सरदाराने-बनी-इसराइल को पेश आया था? उन्होंने अपने नबी से कहा : हमारे लिए एक बादशाह मुकर्रर कर दो ताकि हम अल्लाह की राह में जंग करें	नबी ने पूछा : कहीं ऐसा तो न होगा कि तुमको लड़ाई का हुक्म दिया जाए और फिर तुम न लड़ो? वे कहने लगे : भला यह कैसे हो सकता हैं कि हम राहे-ख़ुदा में न लड़ें, जबकि हमें अपने घरों से निकाल दिया गया है और हमारे बाल-बच्चे हमसे जुदा कर दिए गए हैं	मगर जब उनको जंग का हुक्म दिया गया, तो एक कलील तादाद के सिवा वे सब पीठ मोड़ गए, और अल्लाह उनमें से एक-एक ज़ालिम को जानता है| उनके नबी ने उनसे कहा कि अल्लाह ने तालूत को तुम्हारे लिए बादशाह मुकर्रर किया है	यह सुन कर वे बोले, "हमपर बादशाह बनने का वह कैसे हक़दार हो गया? उसके मुक़ाबले में बादशाही के हम ज़्यादा मुस्तहिक हैं| वह तो कोई बड़ा मालदार आदमी नहीं है |" नबी ने जवाब दिया, "अल्लाह ने तुम्हारे मुक़ाबले में उसी को मुन्तखाब किया है और उसको दिमाग़ी व जिस्मानी दोनों किस्म की अहलियतें फरावानी

creatures' needs and All-Knowing. Furthermore, their Prophet told them: "The sign of his appointment as a king is that there will come to you the chest in which there is tranquillity from your Rabb, the residue of relics which the family of Musa (Moses) and the family of Haroon (Aaron) left behind, and that chest will be carried by the angels. Surely, therein is a sign for you if you are true believers.	के साथ अता फरमाई हैं और अल्लाह को इखतियार है कि अपना मुल्क जिसे चाहे दे| अल्लाह बड़ी वुसअत रखता है और सब कुछ उसके इल्म में है|" इसके साथ उनके नबी ने उनको यह भी बताया कि "ख़ुदा की तरफ़ से उसके बादशाह मुकर्रर होने की अलामत यह है कि उसके अहद में वह सन्दूक तुम्हें वापस मिल जाएगा जिसमें तुम्हारे रब की तरफ़ से तुम्हारे लिए सुकूने-कल्ब का सामान है, जिसमें आले-मूसा और आले-हारून के छोड़े हुए ताबर्रुकत हैं, और जिसको इस वक्त फ़रिश्ते संभाले हुए हैं| अगर तुम मोमिन हो, तो यह तुम्हारे लिए बहुत बड़ी निशानी है|"
Tafsir	